संजीवनी पब्लिक स्कूल : दत्त कार्य : विषय : हिन्दी : कक्षा : आठवीं

पुस्तक : नव भारती

पाठ-1 जग जीवन में जो चिर महान : कवि : सुमित्रानंदन पंत

अभ्यास कार्य : कविता :

कॉपी कार्य : मौखिक प्रश्न : — सर्वप्रथम शब्द-अर्थ कॉपी में करके फिर अभ्यास कार्य करें।

प्र० कवि किससे और क्या प्रार्थना कर रहे हैं?

उ० कवि ईश्वर से मानव के बीच भेदभाव को मिटाने की प्रार्थना कर रहे हैं।

प्र० कवि ने 'चिर महान' किसे कहा है?

उ० कवि ने 'चिर महान' 'सत्यम शिवम सुन्दरम' को माना है।

प्र० लोगों के बीच के भेदभाव को कैसे मिटाया जा सकता है?

उ० लोगों के बीच के भेदभाव को केवल प्रेम प्रभा अर्थात प्यार के प्रकाश के द्वारा ही मिटाया जा सकता है।

लिखित प्रश्न : अति लघु उत्तर :

प्र० चिर महान कैसे व्यक्ति होते हैं?

उ० चिर महान व्यक्ति वे होते हैं, जो 'सत्यम शिवम सुन्दरम' की भावना से परिपूर्ण होते हैं।

प्र० दिशा-दिशा में कवि किसका प्रसार करना चाहता है?

उ० कवि चारों दिशाओं में प्रेम का प्रकाश फैलाना चाहता है।

प्र० चिरकाल से क्या बंद है?

उ० चिरकाल से मानव के हृदय के द्वार बंद है।

लघु उत्तर : प्रश्न :

प्र० प्रकाश बन कर कवि की क्या-क्या करने की अभिलाषा है?

उ० प्रकाश बन कर कवि, मानव-मानव में आपसी प्रेम को बढ़ाना चाहता है। कवि यह भी चाहता है कि मानव को किसी भी प्रकार के भय, संशय, और भेदभाव से मुक्ति प्राप्त कर सके।

प्र० 'मिल जावें जिसमें अखिल व्यक्ति' पंक्ति से कवि का क्या आशय है?

उ० प्रस्तुत पंक्ति का आशय है कि कवि प्रेम के प्रकाश के द्वारा सब प्रकार का भेदभाव समाप्त करके पूरे विश्व के लोगों को एक करना चाहते हैं।

प्र० मानव हृदय के द्वार खोलने से क्या होगा?

उ० मानव हृदय के द्वार खोलने से मानव जाति को भेदभाव रूपी अन्धकार से मुक्ति प्राप्त हो जाएगी।

दीर्घ उत्तर : प्रश्न

प्र० कविता के आधार पर लिखिए कि विश्व में नव जीवन किस प्रकार संभव है?

उ० कविता के आधार पर विश्व में नव जीवन तभी संभव है, जब मनुष्य के मन से किसी भी प्रकार के भय, संशय और भेदभाव रूपी अंधकार नष्ट हो जाएगा और उसमें प्रेम का प्रकाश भर जाएगा।

प्र० कविता का मूल भाव अपने शब्दों में लिखिए।

उ० यदि मानव भय, संशय, अंध भक्ति तथा ऊँच-नीच के भेदभाव को त्याग दे, तो विश्व में सुख-समृद्धि से भरपूर एक नए जीवन का संचार होगा।

प्र० निम्न पंक्ति का सप्रसंग भावार्थ लिखिए :-

Scanned with CamScanner

संकेत
दिशा-दिशा - - - - - - - स्वर्ग-द्वार।(पृष्ठ-9)

प्रसंग:- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक नवभारती पाठ-1 'जग जीवन में जो चिर महान' कविता से ली गई है, जिसके कवि सुमित्रानंदन पंत भेद-भाव मुक्त समाज की कामना करते हैं।

भावार्थ:- कवि ईश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं कि वह हर दिशा में प्रेम का प्रकाश फैलाकर हर प्रकार से भय मुक्त, संशय मुक्त, भेदभाव मुक्त समाज का निर्माण करके सदियों से बंद हृदय के स्वर्ग द्वार को खोल सके।

अभ्यास कार्य : पुस्तक कार्य

भाषा ज्ञान

प्रश्न: दिए गए शब्दों के पर्यायवाची शब्द में ✓ निशान लगाइए -

संशय: संदेह, शंका , अखिल: संपूर्ण, समस्त , प्रकाश: प्रभा, दीप्ति

विश्व: संसार, दुनिया, सवेरा: प्रातः, सुबह

प्रश्न: दिए गए वाक्यों को पढ़कर रेखांकित समरूपी भिन्नार्थक शब्दों के अर्थ लिखिए:-

	अर्थ		
(क) चिर	बहुत लंबे समय के लिए	(ख) दिशा	पूर्व, पश्चिम, उत्तर दक्षिण
चीर	वस्त्र	दशा	स्थिति
(ग) और	तथा	(घ) दिन	दिवस
ओर	तरफ	दीन	गरीब

प्रश्न: दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखिए:-

मानव - दानव   जीवन - मरण   नव - पुरातन
महान - तुच्छ   प्रकाश - अन्धकार   स्वर्ग - नरक

प्रश्न: वर्ण-विच्छेद कीजिए-

महान:- म् + अ + ह् + आ + न् + अ।

पूर्ण :- प् + ऊ + र् + ण् + अ।

भेदभाव:- भ् + ए + द् + अ + भ् + आ + व् + अ।

प्रेमी :- प् + र् + ए + म् + ई।

प्रसार:- प् + र् + स् + आ + र् + अ।

विहान:- व् + इ + ह् + आ + न् + अ।

Scanned with CamScanner